[Social Issues and Environmental Problem,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3240

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

प्राकृतिक आपदा: जल प्लावन और जय शंकर प्रसाद की कामायनी

नीलम राठी
एसोसिएट प्रोफेसर, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

आलेख "प्रकृति की घटनाएँ जब चरम रूप ग्रहण कर लेती हैं तो उनसे मानव सहित सम्पूर्ण जैव जगत कठिनाई में पड जाता है और विनाश की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी घटनाएँ कभी-कभी इतनी त्वरित होती हैं कि संभल पाना कठिन हो जाता है। प्रकृति की इन घटनाओं के सामने मनुष्य बौना हो जाता है जैसे ज्वालामुखी,भूकंप और जल प्लावन आदि। यूं तो ऐसी घटनाएँ प्रकृति की सामान्य प्रक्रिया से जन्म लेती हैं,लेकिन इनकी गहनता और विस्तार के लिए मनुष्य की कुछ अनुक्रियाएं सहायक बन जाती हैं, जैसे वन विनाश से मौसमी घटनाओं की उग्रता। ऐसी विघटनकारी प्राकृतिक घटनाओं को प्राकृतिक आपदा,पर्यावरणीय प्रकोप कहा जाता है"1। पर्यावरण असंतुलन से प्रकट होने वाली दैवीय विपत्तियाँ जैव जगत को अस्त व्यस्त कर देती है। ऐसे प्रकोपों से होने वाली हानि कभी- कभी इतनी भयंकर होती है की सारे वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के बावजूद मानव इनके सामने घुटने टेक देता है। इन प्राकृतिक प्रकोपों का सीधा संबंध पर्यावरण से है। जिनका सिलसिला अनादिकाल से चला आ रहा है। लेकिन ये भी सच है कि इन प्राकृतिक प्रकोपों से मानव संख्या और समृद्धि में वृद्धि के कारण प्राकृतिक संकटों के प्रभाव अधिक हानिकारक होने लगे हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आज प्राकृतिक प्रकोप के पीछे प्रकृति के साथ - साथ मानव जन्य संकट भी जुड़ा होता है।

उत्तराखंड में 2013 में आई भयंकर आपदा जिसमें केदार वैली, बद्रीनाथ जैसे चार धाम (धार्मिक क्षेत्रों) के आस-पास का पहाड़ी क्षेत्र ही नहीं सम्पूर्ण उत्तराखंड जिसमे पौड़ी गढ़वाल, कुमायूं, पिथौरागढ़,मुंसियारी और उत्तराखंड से लगा हिमाचल भी आकाश से आई आफत की भेंट चढ़ गया जिसमें खेत , खलिहान , घर , होटल , मनुष्य , पशु-पक्षी,जीव जन्तु सभी का अस्तित्व खतरे में आ गया। चारो तरफ जल ही जल, त्राहि ही त्राहि, इतिहास फिर दोहरा रहा था। फिर एक सम्पूर्ण सभ्यता नष्ट होने को थी और हम सब मूक दर्शक बन कामायनी के मनु की भांति दूर से और टेलीविज़न चैनलो मे प्रसारित खबरों में उत्तराखंड को जलमग्न देख रहे थे। चार धाम के यात्रियों को क्या पता था कि 16 जून की रात उनके लिए कहर बरपाएगी। उत्तराखंड के चार धाम में मौसम का बदलना आम बात है कभी वहाँ बारिस होने लगती है तो कभी मौसम साफ हो जाता है उन्हे क्या पता था कि यह पानी प्रलय का रूप लेकर उन्हें लील जाएगा। बादल फटने और ग्लेशियर टूटने से यह शैलाब आया। पानी के साथ साथ पत्थर भी बह रहे थे। अकेले केदार नाथ में ही उस रात 5-10 हजार लोग फंसे हुये थे मकान, होटल, खड़ी हुई गाडियाँ सभी तिनकों की

तरह पानी मे बहने लगे। लोग जान बचाने के लिए पहाड़ों कि तरफ भागे लेकिन प्रकृति ने उन्हें संभलने का मौका भी नहीं दिया। उफनती हुई नदियां साक्षात काल का ग्रास बन चुकी थी।

उत्तराखंड त्रासदी के कारण और समाधान उत्तराखंड त्रासदी पीछे मुझे दो प्रमुख कारण नजर आते हैं एक ग्लोबल वार्मिंग और दूसरा विकास के नाम पर प्रकृति का अंधा धुंध दोहन। इसके साथ ही मुझे यह भी लगता है कि पर्यावरण के प्रति हम ये असंवेदनशील रवैया बनाए रखेंगे तो ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ आती रहेंगी और मनुष्य और अन्य जीव जन्तु यूं ही काल का ग्रास बनाते रहेंगे। उत्तराखंड में भी अंधा धुंध निर्माण करते समय लोगों ने ये नहीं सोचा होगा कि इसका परिणाम कितना घातक होगा। पहाड़ी क्षेत्रों में विकास कि नीति ईको फ्रेंडली होनी चाहिए। पर्यटन पर नियंत्रण होना चाहिए अर्थात नियंत्रित और सुनियोजित पर्यटन होना चाहिए। हमे सोचना होगा कि विकास तो हो पर विनाश न हो। स्थानीय लोगो का फायदा भी हो और जंगल भी बचे रहें। केदार क्षेत्र में अलकनंदा नदी अपनी पुरानी धारा को छोडकर मंदिर की दूसरी दिशा में बहने लगी थी, और भूगर्भ शास्त्रियों ने उस छोड़े गए स्थान में होने वाले निर्माण कार्य पर चेतावनी भी दी थी उनका मानना था की नदियां अपनी छोड़ी गई धारा में फिर आती है इसलिए इस दिशा में निर्माण कार्य सुरक्षित नहीं है और हुआ भी वही आपदा के समय नदी ने धारा बदली और उस क्षेत्र में सर्वाधिक विनाश हुआ।

"उत्तराखंड त्रासदी की दुखद यादें अब धूमिल होने लगी हैं लेकिन ये यादें पूरी तरह से खत्म हों उससे पहले इस त्रासदी से सही सीख लेने की जरूरत है। इससे भयाक्रांत होकर किसी गलत नतीजे पर पहुँचने की जरूरत नहीं है। यह सचमुच एक प्राकृतिक आपदा थी जिसे मानवीय भूलों ने और ज्यादा भयावह बना दिया। इसे दुर्भाग्य ही कहेंगे। की केदार क्षेत्र में दो घटनाएँ एक साथ घटी भागीरथी के आस-पास के इलाके में एक बड़ा बादल फटा,जिससे 330 एम एम पानी उस छोटे से सँकरे इलाके में तेजी से नीचे आया। दूसरे उस समय केदार की ऊपरी पहाड़ियों पर सघन बर्फबारी हुई। जिसके कारण केदार तीर्थ के प0 में स्थित चोराबारी झील(गांधी सागर) में पानी अधिक हो गया और वह किसी विशालकाय झरने की तरह बाढ़ की शक्ल में केदारनाथ की ओर आया। ---वस्तुत: जिस चीज ने इस त्रासदी में सबसे ज्यादा भूमिका निभाई वह है अनियंत्रित चार धाम यात्रा। इस धार्मिक यात्रा के चलते नदियों के किनारे और आस - पास के इलाकों में विकास हुआ। चार धाम यात्रा करने वालों की तादाद प्रति दिन बढ़ रही थी। एक अनुमान के अनुसार चार धाम यात्रियों की तादाद बढ़कर प्रति माह 13 लाख हो गई थी। जिस कारण वहाँ बिना किसी योजना के साधनों और सुविधाओं का विस्तार किया जाने लगा। आनन फानन में बहुमंज़िली इमारत खड़ी की जाने लगी। सड़कों की बिना समझे चौड़ाई बढ़ाई जाने लगी। नदियों में ओर नीचे की ओर नीचे तक पानी के एकदम करीब तक होटल बनाने की होड सी बन गई थी। यात्रियों को संभालने के लिए गधे,घोड़े,खच्चर,पालकी,टैक्सी,बसें सब दौड़ने लगी। लेकिन सब अनियंत्रित। यहाँ तक की दुर्घटना वाले दिन केंद्र और राज्य दोनों का ही आपदा प्रबंधन तंत्र इस त्रासदी से निपटने को तैयार नहीं था।"2

यदि यात्रियों की संख्या नियंत्रित व पंजीकृत होती तो हमे उनकी संख्या,उनका परिचय और स्थान की जानकारी कि यात्री किस समय किस स्थान पर हैं ज्ञात होता तो उन तक सहायता पहुंचाना आसान हो सकता था। इसके साथ ही हमारे मौसम विभाग में मौसम के अनुमान की उत्तम तकनीक का अभाव। यदि

मौसम के अनुमान की घोषणाएँ सटीक होती तो यात्रियों को आगे जाने से रोका जा सकता था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस त्रासदी की भयावहता को बढ़ाने में अनियंत्रित और योजना विहीन तीर्थ यात्रा अधिक उत्तरदाई है। उत्तराखंड की इस त्रासदी की भांति जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य कामायनी भी जल प्लावन की घटना पर ही केन्द्रित है। कामायनी की कथा जल प्लावन के पश्चात सृष्टि के नव निर्माण की कहानी है बीच बीच में देव सृष्टि के विनाश के कारणों और स्थितियों पर भी प्रकाश डाला गया है। कामायनी की कथा शतपथ ब्राह्मण, उपनिषदों और पुराणों पर अवलंबित है। शतपथ ब्राह्मण के प्रथम कांड के आठवें अध्याय3 से जल प्लावन संबंधी उल्लेखों का संकलन कर प्रसाद ने इस काव्य का कथानक निर्मित किया है। साथ ही उपनिषदों में निर्मित मनु एवं श्रद्धा के रूपक को भी अस्वीकार नहीं किया है।

संसार की अधिकांशत:सभी सभ्यताएं जल प्लावन की घटना के पश्चात ही पुनर्निर्मित हुई हैं। स्नातकोत्तर के अध्ययन के दौरान कामायनी पढ़ते हुये जिस जल प्लावन की घटना का कल्पना में चित्र बनाया था वही घटना उत्तराखंड त्रासदी के समय टी वी पर लगता था घटते हुये देखी हो? एक पूरी सभ्यता को जल की भेंट चढ़ते हुये। कामायनी का प्रारम्भ जल प्लावन के पश्चात एक मात्र देव शेष आदि पुरुष मनु के मन में उठती विप्लवजन्य चिताओं से होता है। मनु देव सृष्टि के अंतिम अवशेष व नई सृष्टि के प्रथम आदिम पुरुष है। वे हिमालय पर्वत की ऊंची चोटी पर बैठकर अत्यंत करुणाद्र होकर जल प्लावन को देख रहे हैं।

" हिमगिरि के उतुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छांह, एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह"।3 मनु प्रलय से बचने के लिए जिस नौका का आश्रय लिए हुये थे उसे महामत्स्य ने अपनी पूंछ में बांध कर हिमालय पर्वत पर लाकर पटक दिया था। वह नौका अभी भी वट वृक्ष से बंधी हुई थी। मनु चिंतित होकर देव सृष्टि के इस महाविनाश पर विचार कर रहे थे। उनके ऊपर बर्फ, चरो तरफ निर्जन सुनशान देवदारू के वृक्षों से युक्त वातावरण और नीचे जहां तक नजर जाती थी जल ही जल दृष्टिगोचर होता था। जिसे देख मनु का हृदय स्तब्ध रह गया था। मनु विगत पर दृष्टिपात करते हुये देव विनाश का कारण सोचते हैं कि देवताओं में अतिविलासिता हो गई थी। नित्य विलासी देव,आत्म उपासना में ही लीन रहते थे। प्रकृति इस अतिचार को सहन न कर सकी उसने अपना प्रतिशोध लिया। भीषण जल प्लावन के परिणाम स्वरूप देव सृष्टि का विनाश हुआ। केवल मनु ही एकमात्र जीवित बचे वे अपने मद अपने अहंकार में प्रकृति कि सत्ता को ही भुला बैठे थे। परंतु प्रकृति को अपने ऊपर यह अनाचार यह दुराचार सहन न हो सका प्रकृति ने प्रतिशोध स्वरूप देवताओं की विलास भूमि,वैभव और यहाँ तक की स्वयम देवताओं को भी अथाह जल में तिरोहित कर दिया।

"प्रकृति रही दुर्जेय,पराजित,हम सब थे भूले मद में, भूले थे हाँ तिरते केवल सब विलासिता के मद में"।4 देवों के विलास से त्रस्त प्रकृति ने देवों से प्रतिशोध स्वरूप जल प्लावन की घटना को अंजाम दिया। मनु अत्यंत व्यथा के साथ सोचते हैं कि देव सृष्टि का सब कुछ चला गया,अप्सराओं का श्रंगार और देवताओं की वासना सभी जल निमग्न हो गई। " देखा क्या तुमने कभी नहीं, स्वर्गीय सुखों पर प्रलय नृत्य ?"5 त्रासदी के कारण ऐसा लगता था मानो अब समस्त स्रष्टि ही इतिहास हो जाएगी,एक स्वप्न मात्र रह जाएगी। उधर जल प्लावन और उसके ऊपर से भूकंप में पृथ्वी का थर्रा उठना कंगाली में आटा गीला की

उक्ति को चरितार्थ कर रहा था समस्त प्राणी मात्र आश्रय की खोज में था आश्रय के लिए भटक रहा था जल में बड़ी छोटी सभी इमारते धराशाही हो गई थी पृथ्वी जल मग्न थी वृक्ष जमीदोज़ थे आखिर आश्रय लें तो कहाँ - समुन्द्र की लहरें अपना भयंकर प्रलयकारी विनाशकरी गर्जना युक्त रूप धरे बार बार हिमालय से टकरा रही थी बढ़ी आती थी ऐसा लगता था मानो सब कुछ अपने मे समा लेगी। देवताओं में पापाचर इतना बढ़ गया था कि नित्य पशु यज्ञ करने लगे थे ये पशु यज्ञ ही इनके विनाश का कारण बना। मनु के देखते - देखते प्रलय कालीन जल तरंगों के मध्य डूबती उतरती धरती हिचकोले ले रही थी। मनु देखते हैं धीरे धीरे जल का उद्दाम वेग थमने लगा, पानी उतरने लगा जिसके नीचे विलुप्त हुई पृथ्वी उभरने लगी। पूर्व क्षितिज की ओर उदय होते सूर्य कि किरणों ने आशा भरे प्रभात का संदेश दिया और हताशा के वात्याचक्र में पड़े मनु के मन में भी आशा का संचार हुआ। "वह विवरण मुख त्रस्त प्रकृति का आज लगा हंसने फिर से।"6 कामायनी का अंत एक सुखद अंत है लेकिन उत्तराखंड त्रासदी के घाव आज भी हरे हैं आज भी हम उत्तराखंड को फिर से बसा नहीं पाये। अस्थाई पुलों, सडको के निर्माण कर रास्ते बनाए गए हैं किन्तु वे उतने कारगर सिद्ध नहीं हो प रहे हैं। वे अस्थाई पुल एक बरसात भी ठीक से नहीं निकाल पाये और असमय ही कालकवलित हो गए और समस्या फिर वही रही जस की तस। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कामायनी के जल प्लावन की घटना के जैसे ही भयंकर उत्तराखंड की त्रासदी थी। उत्तराखंड की त्रासदी में भी मात्र यात्रियों की ही मृत्यु नहीं हुई थी अपितु रामबाड़ा,गौरीकुण्ड सहित अनेक गाँव का नाम निशान भी बाकी न रहा,लंबे समय तक दूर दराज के गांवों से संपर्क तक न हो सका,राहत सामाग्री तक न पहुँच सकी। स्कूल,कालेज,अस्पताल,बैंक,बिजली और टेलीफोन के तार सब इस प्राकृतिक आपदा की भेंट चढ़ चुका थे। कामायनी के मनु,श्रद्धा ने जिस प्रकार शनै: - शनै सृष्टि का पुनर्निर्माण किया उसी प्रकार लगता है उत्तराखंड के पुनर्निर्माण की आवश्यकता अभी और भी है हमे समझना होगा।

निष्कर्ष हम प्राकृतिक प्रकोप को रोक तो नहीं सकते किन्तु सचेत रहकर उसके प्रभावों को उचित प्रबंधन द्वारा न्यूनीकृत कर सकते हैं। प्रसाशन को भी दुर्घटना संभावित ऐसे क्षेत्रों में पर्यावरण विभाग के निर्देशों का सख्ती से पालन कराया जाना चाहिए।अन्यथा आदिकाल का शतपथ ब्रहमण,उपनिषदों एवं पुराणों से उद्धृत कामायनी मे चित्रित जल प्लावन हो या उत्तराखंड की त्रासदी परिणाम भयंकर ही होंगे। फिर फिर अनेक सभ्यताएं समाप्त होने के कगार पर होंगी। और जल जीवन एक दूसरे के लिए न होकर एक दूसरे के खिलाफ नस्ट करने को आतुर होंगे।

संदर्भ

1 प्राकृतिक प्रकोप एवं आपदाएँ, एस पी मिश्रा, पेज न0 1-2
2 वी जी वर्गीज़, लेख, इंटरनेट से
3 कामायनी, जय शंकर प्रसाद, भूमिका से
4 कामायनी, जय शंकर प्रसाद, चिंता सर्ग,से
5 वही
6 वही, आशा सर्ग,